

7.अन्नप्राशन

अन्नप्राशन संस्कार एक वैज्ञानिक संस्कार है । यह वच्चे के शरीर विज्ञान पर आधारित है । जब वच्चा अन्न पचाने योग्य हो जाये तब अन्नप्राशन करें । आश्वलायन गृह्यसूत्र- १/१६/१,४,५ के अनुसार छठे मास में अन्नप्राशन करना लिखा है- षष्ठे मास्यन्नप्राशनम्१, घृतौदनं तेजस्कामः-२, दधिमधुघृतमिश्रितमन्नं प्राशयेत्३ इनका क्रमशः इस प्रकार अर्थ है - अन्नप्राशन छठे मास में हो-१, घृत तथा भात तेजयुक्त होता है-२, दही, मधु और घृत मिश्रित अन्न उपयुक्त है -३ । यहाँ यह समझना आवश्यक है कि छठा मास न्यूनतम अवधि है । वैसे जब तक वच्चा माँ का दूध अनुकूलतापूर्वक ले; अच्छा है । अन्नप्राशन के बाद भी माँ का यथासम्भव दूध वच्चे के लिये लाभकारी है । लगभग एक वर्ष तक वच्चा दूध पर चलता है । दूसरे वर्ष में दूध तथा अन्न श्रेयस्कर है । पर कुछ वच्चे न्यूनतम छठे मास के बाद ही अन्न पचाने योग्य हो जाते हैं । ऐसे में थोड़ा-थोड़ा हल्का अन्न पक्व चावलादि देना उपयुक्त है ताकि आगे चलकर अन्न को वह शौक से खा सके । धीरे-धीरे अन्न बढ़ावें और दूध घटावें । दही, मधु और घृत को मिलाकर देने का अर्थ भी यही है कि वच्चा /वच्ची भिन्न-भिन्न पुष्टकारी खाद्य पदार्थों से परिचित हो जो इनके स्वास्थ्य के लिये भी हितकारी हो । उचित मात्रा में घृत और भात भी सुपाच्य पदार्थ है जो तेज भरने वाला है । जब वच्चा दाँत निकालने लगे तब उसे अन्न देना शुरु कर दें । विना दाँत का वच्चा माँ के दूध पर ही जीता है । यह बड़ा ही वैज्ञानिक है; प्राकृतिक है । तभी तो ईश्वर ने प्रारम्भ में ही माँ के स्तन में दूध दे दिया । ताकि संसार में आते ही वच्चा भोजन प सके । जब वच्चे का दाँत आने लगा तो उसे संसार में अन्न भी मिल गया क्योंकि दाँत से वह अन्न चबा सकता है और अन्न को पचा भी सकता है । क्या ही अच्छा कहा गया-

जब दाँत न थे, तब दूध दियो,
जब दाँत दियो तब अन्न भी दें ।
काहे को सोच करै मन मूरख,
सभै को दियो सो तोको भी दें ।

इस प्रकार अन्नप्राशन एक अत्यन्त प्राकृतिक और वैज्ञानिक व्यवस्था है जो ईश्वर की व्यवस्था से सीधी जुड़ी हुयी है ।

विधिगत्विचार- अन्न प्राशन के लिये भोजन-अन्न निर्देशानुसार तैयार करें । आगे संस्कारानुसार विधिवत्त्यज्ञ-हवन करें । जब अन्न प्राशन का समय आये तब निम्न लिखित मंत्र को पढ़कर अन्न प्राशन करें अर्थात् वच्चे को तैयार किया हुआ भोजन थोड़ा-थोड़ा खिलावें

|

मंत्र- ओ३म्अनपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः । प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि
द्विपदे-चतुष्पदे ॥ यजुर्वेद ११/८३ ।

इसका सामान्य अर्थ- हे अन्न के स्वामी परमात्मा, हमें रोगरहित शुद्ध पुष्टिकारक अन्न का सुख भाग प्राप्त करायें । प्रार्थना है कि आप अपनी कृपा से अन्न पैदा करने वाले किसान को आगे बढ़ावें और इस प्रकार सब मनुष्यों व सब प्राणियों समेत हमें उक्त अन्न की ऊर्जा-शक्ति उपयुक्त रूप से मिले ।

मनुष्योचित खाद्य पदार्थों को वैदिक शास्त्रों में अन्न कहा जाता है । यही शाकाहारी भोजन मान्य है -कहा गया है-“ पयः पशूनां रसमौषधीनाम्” दूध, रस, औषधि युक्त भोजन अन्न कहलाता है जो मनुष्य के लिये सदा हितकारी है । ध्यान देने योग्य बात है कि इस संस्कार का नाम अन्न प्राशन रखा गया है, न कि माँस प्राशन या कोई अन्य । महर्षि दयानन्द ने यही माना है । वच्चे पर शुद्ध शाकाहारी भोजन का संस्कार पड़े अतः प्रारम्भ से ही माता-पिता को चाहिये कि वे शुद्ध शाकाहारी भोजन का ही परिचय करायें । आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः - शुद्ध भोजन से शुद्ध वृद्धि का विकास होता है । हिन्दी में भी एक कहावत है- जैसा खाओ अन्न वैसा बने मन । अतः सात्विक, शुद्ध, प्रसन्न और सफल जीवन के लिये शुद्ध सात्विक आहार का सेवन नितान्त आवश्यक है । यही वैदिक उपदेश है ।

महावामदेव्यगान- यह एक निश्चित प्रक्रिया से व्यवस्थित मंत्रोच्चारण/ मंत्र-गान है जो वातावरण को अत्यन्त प्रिय, धार्मिक, तथा उत्तम संस्कार-ग्रहणयुक्त बनाता है । यह गान सभी संस्कारों में विधानित है । इससे सब उपस्थित जन सुनकर मंत्र-मुग्ध हो प्रसन्न होते हैं और फिर सभी मिलकर योग्य मान्य पुरोहित आचार्य के निर्देशन में वच्चे के सुखादि वृद्धि के लिये पवित्र व प्रसन्न हृदय से विधिवत् आशीर्वाद देते हैं -

इस संस्कार में आशीर्वाद के लिये यह वाक्य प्रयुक्त है । “ त्वमन्नपतिरन्नादोवर्धमानो भूयाः ” अर्थात् हे बालक/बालिके, तुम अन्न के स्वामी बन, अन्न खाने वाला होकर सदा जीवन में बढ़ते रहो । यहाँ वच्चे को इस आशीर्वाद से संस्कारित किया जा रहा है कि वह न केवल अन्न खाने वाला हो अपितु बढ़ा होकर अन्न का स्वामी भी बने । जो अन्न का स्वामी बनेगा, वही यथायोग्य दान भी करेगा अतः भाव है कि पुरुषार्थ से अन्न-धन कमाये, बाँटे, खाये और बढ़ता रहे । वैदिक संस्कृति हमें यही सिखाती है ।

Anna praasana ka Mantra vidhi bhaaga